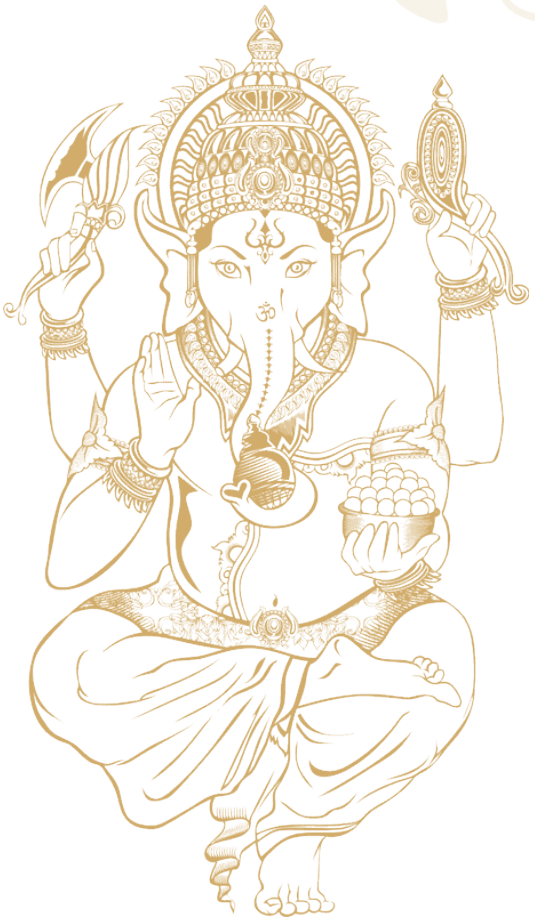

Mr.

17 Apr 2026

05:33 PM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121961501**

तिथि 17/04/2026 **समय** 17:33:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:33
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	06:54:24 घं
वेलान्तर	00:00:24 घं
सूर्योदय	05:54:03 घं
सूर्यास्त	18:47:55 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	1
नक्षत्र	अश्विनी
योग	विष्कुम्भ
करण	किंस्तुघ्न

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	सिंह
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	चे-चेतन
पाया(रा.-न.)	लौह-स्वर्ण
होरा	गुरु
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

केतु 5वर्ष 2मा 22दि

केतु

17/04/2026
10/07/2031

	00/00/0000
	17/04/2026
सूर्य	12/06/2026
चन्द्र	11/01/2027
मंगल	10/06/2027
राहु	27/06/2028
गुरु	03/06/2029
शनि	13/07/2030
बुध	10/07/2031

योगिनी

भ्रामरी 2वर्ष 11मा 25दि

भ्रामरी

17/04/2026
12/04/2029

	00/00/0000
	17/04/2026
उल्का	12/12/2026
सिद्धा	22/09/2027
संकटा	12/08/2028
मंगला	22/09/2028
पिंगला	12/12/2028
धान्या	12/04/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			17:44:48	कन्या	हस्त	3	चंद्र	शनि	---	0:00			
सूर्य			03:15:53	मेष	अश्विनी	1	केतु	सूर्य	उच्च राशि	1.85	कलत्र	पितृ	जन्म
चंद्र			03:22:27	मेष	अश्विनी	2	केतु	सूर्य	सम राशि	1.14	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल		अ	11:44:42	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	चंद्र	मित्र राशि	1.48	मातृ	भ्रातृ	मित्र
बुध			09:10:53	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	नीच राशि	1.10	पुत्र	ज्ञाति	मित्र
गुरु			23:00:14	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.41	अमात्य	धन	वध
शुक्र			27:38:58	मेष	कृतिका	1	सूर्य	चंद्र	सम राशि	1.27	आत्मा	कलत्र	विपत
शनि			13:20:45	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	राहु	सम राशि	1.38	भ्रातृ	आयु	मित्र
राहु	व		13:42:18	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु	व		13:42:18	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

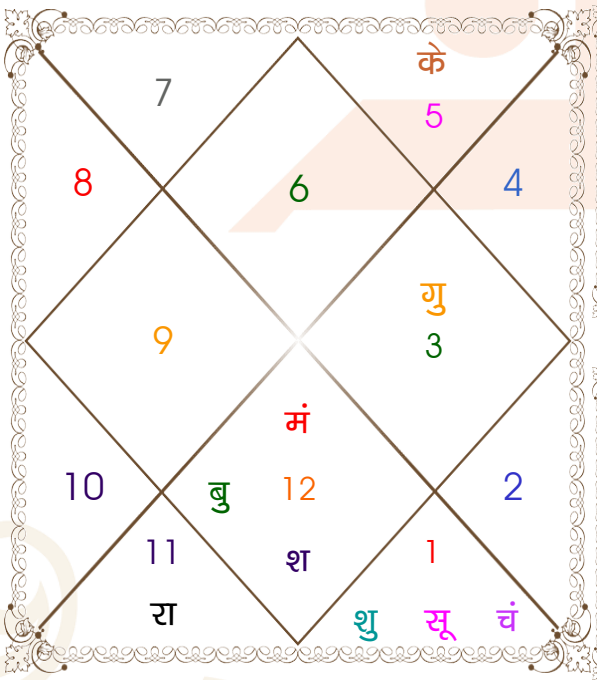

चन्द्र कुंडली

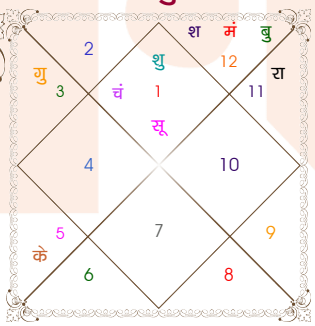

नवमांश कुंडली

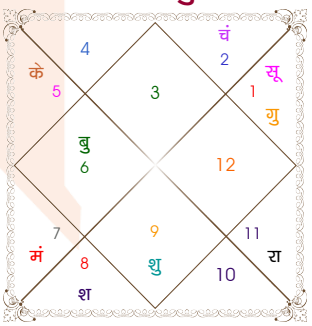

सर्वाष्टकवर्ग

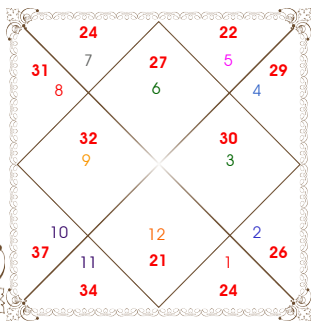

दशमांश कुंडली

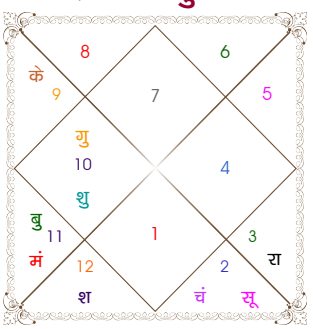

नक्षत्रफल

अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने के कारण आपकी जन्म राशि मेष तथा राशिस्वामी मंगल होगा। आपकी अश्वयोनि, देवगण आद्यनाडी तथा सिँह वर्ग होगा। द्वितीय चरण में पैदा होने के कारण आपके जन्म नाम का आद्याक्षर "चे" होगा यथा चेतराम।

अश्विनी नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्रों के अन्तर्गत की जाती है। यद्यपि द्वितीय चरण में उत्पन्न जातकों को इसका दोष अल्प मात्रा में होता है। अतः जन्मसमय में इसकी शान्ति अवश्य करवा लेनी चाहिए। इसके लिए नक्षत्र के कम से कम 2800 जप करवाने चाहिए तथा शान्ति के दिन दशाँश का हवन करवाना चाहिए। इससे शुभ फलों में वृद्धि होगी। यह कार्य योग्य आचार्य द्वारा सम्पन्न होना चाहिए।

मंत्र – ऊँ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्।
वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ऊँ अश्विनी कुमाराभ्याम् नमः।।

अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रकृति श्रृंगार प्रिय होगी तथा आभूषणों से विशेष लगाव रहेगा। आप देखने में अत्यन्त रूपवान होंगे तथा कार्य शैली चतुराई एवं बुद्धिमता पूर्ण ढंग की होगी जिसे देख कर लोग अनायास ही आपकी तरफ आकर्षित होंगे। साथ ही आप सौभाग्य से भी युक्त रहेंगे।

प्रियभूषणः सुरूपः सुभगो दक्षोश्विनीषु मतिमांश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न बालक आभूषण प्रिय, रूपवान, भाग्यवान, चतुर तथा बुद्धिमान होता है।

ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप सतत प्रयत्नशील रहेंगे। आपके विनयशील व्यवहार से सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार आपका यश दूर दूर तक फैलेगा। जीवन में अधिकांशतः आप सुख एवं आनन्द की अनुभूति करेंगे तथा धन एवं अन्य भौतिक सुखों का आपको कभी भी अभाव नहीं रहेगा।

अश्विन्यामति बुद्धिवित्तविनय प्रज्ञा यशस्वी सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् अश्विनी में जन्मा जातक अति बुद्धिमान, धनवान, विनयशील, ज्ञानी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

आप हमेशा सत्य का पालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। बाल्यकाल से ही दूसरों के प्रति सेवा भाव से भी आपका अन्तर्मन ओत प्रोत रहेगा। सभी सांसारिक भौतिक सुख सुविधाएं आपको प्राप्त होंगी। आप भाग्यवान पुरूष होंगे क्योंकि आप एक सुशील पत्नी के पति तथा सदगुणों से युक्त पुत्रों के पिता होंगे। जो नित्य आपके यश की अभिबृद्धि करेंगे।

सदैवसेवाभ्युदितौ विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसम्पत्।
योषा विभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक सेवाभावयुक्त, विनयशील, सत्य का पालन कर्ता सर्वसम्पति को प्राप्त तथा सुशील पत्नी एवं सुपुत्रों से युक्त होता है।

आप अपने दैनिक अथवा व्यापारिक कार्यों में अत्यन्त व्यस्त रहेंगे। इससे आपके शरीर तथा उचित खानपान की उपेक्षा होगी जिससे शरीर में मोटापा आ सकता है। आप अपने परिश्रम तथा कौशल से धनार्जन करेंगे तथा अपने सद्व्यवहार से जनता के विभिन्न वर्गों में समान लोकप्रियता को प्राप्त करने में सफल होंगे।

सुरूपः सुभगोदक्षः स्थूलकायो महाधनी।
अश्विनी संभवे लोके जायते जन वल्लभः।।
जातक दीपिका

अर्थात अश्विनी में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, भाग्यवान, चतुर, स्थूलकाय, धनवान तथा जनता का प्यारा होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीड्ति रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

आपकी मेष राशि है अतः आप कम भोजन करने वाले होंगे। आप अपने माता पिता की इकलौती सन्तान हो सकते हैं। तथा अन्य भाई बहन होने पर आप ही सर्वश्रेष्ठ होंगे।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपका वर्ण ताम्र के समान गौर वर्ण से युक्त होगा तथा गोलाकार नेत्रों में लाली होगी। आपके सिर पर चोट या घाव का निशान हो सकता है। भविष्य में आप गंजे भी हो सकते हैं। आपके हाथ तथा पैर कोमल कान्ति से सुशोभित होंगे। जल से भयभीत होना आप का स्वाभाविक गुण होगा। आप एक साहसी पुरूष होंगे तथा कठिन से कठिन परिस्थितियों का

डटकर प्रतिरोध करेंगे। सामाजिक मान सम्मान आपको स्वतः प्राप्त होगा। बुद्धि आपकी चंचल होगी तथा धन को आप सम्मान से अधिक प्राथमिकता देंगे। जिससे आप कभी-कभी अपने लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे। आप बहुत से मित्रों के मित्र तथा सहयोगियों के शुभचिन्तक होंगे। आपके पुत्रों की संख्या भी कन्याओं की अपेक्षा अधिक रहेगी। सभी से स्नेह करना आपकी प्रवृति का एक मुख्य अंग होगा। अपनी इसी प्रवृति के कारण समाज के विशिष्ट तथा सामान्य दोनों वर्गों से आप सहानुभूति तथा आदर प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्विततं सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आप उन लोगों में से होंगे जो शीघ्र ही क्रोधित होकर शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते हैं। आपका स्वभाव भ्रमण प्रिय होगा तथा अगम्य स्थान अर्थात जहाँ आसानी से न पहुँचा जा सके उसकी सैर आपको विशेष प्रिय होगी। आपकी हथेली में शौर्य सूचक चिन्ह चक्र पताका आदि भी हो सकते हैं। महिला वर्ग में आप प्रिय तथा आदरणीय समझे जाएंगे। दूसरे लोगों की सेवा तथा उन्हें सहयोग प्रदान करना आप अपना परमपुनीत कर्तव्य समझेंगे चाहे आप स्वयं परेशानी का सामना ही क्यों न कर रहे होंगे।

वृतातामृदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

धन को अनावश्यक प्राथमिकता देना तथा महिला वर्ग की तरफ विशेष आकर्षित होना आप के इस स्वभाव से आपके सम्मानीय बुजुर्ग तथा संबंधीगण असन्तुष्ट रहेंगे। जिससे उनका आपसे या आपका उनसे अलगाव हो सकता है। आप अपनी पत्नी के कहे अनुसार ही अधिकांश कार्य सम्पन्न करैंगे तथा स्वविवेक से कम ही करेंगे। इससे भी संबधियों तथा बुजुर्गो से तनाव बढ़ सकता है। धनार्जन आप अपने बाहुबल तथा बुद्धिबल से स्वयं करेंगे तथा धन एवं पुत्र से युक्त होकर समाज में कीर्ति प्राप्त करेंगे।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

सांसारिक कार्यों में व्यस्तता के कारण आपके सामाजिक अथवा व्यापारिक संबध विस्तृत होंगे अतः मौका पड़ने पर आप मांस मदिरा इत्यादि अभक्ष्य पदार्थों का उपभोग भी करेंगे।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपके स्वभाव में कभी-कभी उग्रता की झलक देखने को मिलेगी। इस उग्रता से आप परेशानियों में भी फंस सकते हैं। चंचल प्रवृति होने के कारण यदा कदा आप मिथ्या भाषण का भी आश्रय लेंगे।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

आप यौगिक क्रियाओं के प्रति भी श्रद्धा रखेंगे। आयु के साथ-साथ बाल भी कम हो सकते हैं अर्थात् खल्वाट योग बनता है। पित्तकारक या गर्मी प्रदान करने वाले पदार्थो की यथाशक्ति उपेक्षा करें गर्मी के प्रभाव से मस्तिष्क में विकार उत्पन्न हो सकता है।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरुषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आप देवगण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी वाणी मधुर तथा सच बोलने वाली होगी। वाणी के द्वारा कभी भी अन्य लोग आपसे किसी भी प्रकार कोई कष्ट नहीं पाएंगे। आप प्रतिभाशाली होंगे तथा सब कुछ आसानी से आत्मसात करने की प्रतिभा आप में विद्यमान रहेगी। शुद्ध सात्विक एवं अल्प भोजन करना आपका मन पसन्द कार्य होगा। गुणों के आप ज्ञाता होंगे तथा विद्वान एवं महान लोगों ने जिन गुणों का वर्णन किया है उन समस्त गुणों से आप युक्त रहेंगे। वैभव तथा ऐश्वर्य का आप कभी भी अभाव प्रतीत नहीं करेंगे क्योंकि आप अपार धन एवं सम्पत्ति के स्वामी होंगे।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

देखने में आपका शरीर सुन्दर और स्वस्थ होगा। दान देना आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी तथा जरूरत मन्द लोग तथा संस्थाएं आपकी हृदय से आभारी रहेंगे। आप सादगी पसन्द व्यक्ति होंगे। छल, कपट तथा प्रपंच का नाम मात्र का भी आपके अन्दर समावेश नहीं होगा। तथा विद्वान योग्य गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।

जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

अश्व योनि में जन्म लेने के कारण आप स्वछन्दता प्रिय व्यक्ति होंगे तथा स्वतंत्रतापूर्वक विना किसी रोक टोक या सलाह के आपको कार्य करना अच्छा लगेगा। सद्गुण आपके अन्दर नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेंगे एवं साहस तथा बहादुरी का अभाव नहीं होगा। प्रत्येक कार्य को अपने साहस और बाहुबल से सम्पन्न करने में आप समर्थ रहेंगे। जिससे समाज में यथोचित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। आप जहाँ भी कार्य करेंगे आप पर पूरा विश्वास किया जायेगा।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी (1,6.11) शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष की तिथियां, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बवकरण, रविवार प्रथम प्रहर तथा मेष राशि में स्थित चन्द्रमा हमेशा आपके लिए अनिष्ट फलदायी रहेगा। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 दोनों पक्षों की तिथियों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण, लेन-देन, साझेदारी आदि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें। कार्य पूर्ण नहीं होंगे तथा अशुभ फल मिलेंगे। इसके अतिरिक्त मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बव करण, रविवार तथा प्रथम प्रहर एवं जब चन्द्रमा मेष राशि में स्थित हो तब भी शुभ कार्यों को न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। उपरोक्त महीने, दिन तिथि, वार तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखा जाना चाहिए।

जब समय आपके लिए प्रतिकूल चल रहा हो अर्थात आपको मानसिक कष्ट हो रहा हो अथवा व्यवसाय में लगातार हानि हो रही हो या हानि होने की संभावना लग रही हो उस समय आपको अपने इष्ट हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए! तथा सोना, ताँबा, गुड़, घी, रक्त कनेर के फूलों का दान करना चाहिए। साथ ही मंगलवार के उपवास भी करने चाहिए। एतदतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7 हजार जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव भी शनैः शनैः न्यून होता जाएगा।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ थीं भौमाय नमः।